International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

Original Article

वैश्विक परिदृश्य में बौद्ध धर्म का योगदान।

डॉ. अमरेंद्र कुमार मौलाना

सहायक प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष – पाली,

किशोरी सिन्हा महिला महाविद्यालय, औरंगाबाद

अंगीभूत इकाई-मगध विश्वविद्यालय, बोद्ध गया

Manuscript ID:
IJAAR-130401
ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 4
March – April 2026
Pp. 1- 6

Submitted: 5 Feb.2026
Revised: 20 Feb. 2026
Accepted: 1 Mar. 2026
Published: 10 Mar. 2026

Corresponding Author:
डॉ. अमरेंद्र कुमार मौलाना

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.19126503

DOI Link: https://doi.org/10.5281/zenodo.19126503

Creative Commons

OPEN ACCESS

गौतम बुद्ध सिर्फ अपने समय के ही नहीं बल्कि प्राचीन काल से लेकर आज तक एक अद्भुत व्यक्ति के स्वामी थे। उनके व्यक्तित्व की महत्व इसलिए नहीं है कि वह राज परिवार के घर उत्पन्न हुए थे आपितु विश्व बंधुत्व के सिद्धांत को रचने वाले व्यक्ति थे। अहिंसा का प्रेम पाठ पढ़ाने वाले, सद्भाव बिखरने वाले, करुणा की कर्मशाला में अष्टांगिक मार्ग के द्वारा निर्माण का नव विधान रखने वाले थे। ईशा के ५६३ ई० पू० कपिलवस्तु के महाराजा सूर्योदय के घर में उत्पन्न सिद्धार्थ ही आगे चलकर बुद्ध कहलाए। वैशाख पूर्णिमा की पवित्रम तिथि में ही जन्म हुआ ज्ञान की प्राप्ति और निर्माण भी इसी तिथि में हुआ। पिता द्वारा गृहस्थ बनाने के सारे उपाय व्यर्थ हुए एवं सन्यासी जीवन ही उनको पसंद आया। आत्मज्ञान की मंजिल पर पहुंचने के लिए जिस पथ को उन्होंने अपनाया वह आगे चलकर विश्व कल्याणकारी सिद्ध हुआ। गुरु अलार कलाम से प्रव्रज्या ग्रहण करने के बाद कठिन तप का आश्रय लेने पर भी आत्मज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई। वैशाख पूर्णिमा को सुजाता के द्वारा खीर खाने के बाद उसी रात को ज्ञान की प्राप्ति हुई और वह अपने मानवीय आदर्श सिद्धांतों को संपूर्ण मानव जाति के कल्याण अर्थ उपस्थित किया। उनकी धारणा थी की अज्ञानता से भी प्रकार के दुखों का मूल कारण है यदि इस अभियंता को दुख को समाप्त कर दिया जाए तो स्वभावता सर्वत्र शांति व्याप्त हो जाएगी।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:

डॉ. अमरेंद्र कुमार मौलाना. (2026). वैश्विक परिदृश्य में बौद्ध धर्म का योगदान। International Journal of Advance and Applied Research, 13(4), 1– 6. https://doi.org/10.5281/zenodo.19126503

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

यह शांति कुछ और नहीं आप ही तो निर्माण की प्राप्ति है।[१] बुद्ध ने अनुभव किया था कि इस विश्व में दुख है। विश्व के सभी प्राणी सुख को चाहते हैं दुख को नहीं। यह सभी प्राणियों की सवाभाविक प्रवृत्ति है। वर्तमान में भी यही स्थिति है। तृष्णा इस दुख का मूल कारण है। आज संपूर्ण विश्व शांति चाहता है। असीम भौतिक सुखों की उपस्थिति के बावजूद भी वह मानव सुखी नहीं है अपितु मानसिक और शारीरिक दृष्टि से आशान्त होकर शांति की खोज में भटक रहा है। संपूर्ण विश्व भयाक्रांत है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के स्वतंत्र अस्तित्व को देखना नहीं चाह रहा है। वर्तमान में भारत ,पाक, इजरायल, फिलिस्तीन,रूस, यूक्रेन, अमेरिक , वेनेजुएला , इराक आदि राष्ट्र युद्ध के कारण अनेक समस्याओं से जूझ रहे हैं। ईर्ष्या, द्वेष, तृष्णा और घृणा कारण बन चुके हैं इस अशांत विश्व के लिए।

बुद्ध ने सत्य के अन्वेषण के क्रम में चार आर्य सत्य पर प्रकाश डाला । ये है-दुख, दुख का कारण, दुख का निरोध और दुख निरोध की ओर जाने वाला मार्ग। इसी पृष्ठभूमि में बुद्ध ने कहा था-शांति बाह्य तत्वों नहीं अपितु स्वस्थ मानवीय चिंतन से प्राप्त होता है। यह मन की धारणा है। मानवीय मस्तिष्क का चिंतन तथागत के दर्शन का महत्वपूर्ण आधार है।[२] मन और मस्तिष्क में सोची गई अच्छी या बुरी भावनाओं को काज रूप देते हैं तो उसके परिणाम वैसे ही होंगें । कुशल चित्त के कार्य अच्छे परिणाम के कारण बनते हैं तो अकुशल चित्त के कार्य पूरे परिणामों के कारण बनते हैं। हम अपने मस्तिष्क को नियंत्रित एवं शिक्षित कर अत्यंत सरलता से अपने जीवन के शांति परदायक तत्वों को प्राप्त कर सकते हैं।[३] यह स्थिति विश्व के प्रत्येक व्यक्ति के लिए हितकारी हो सकती है। अतः दु:खों से मुक्ति हेतु आवश्यक हो जाता है मन पर नियंत्रण करना। बुद्ध ने इसी पृष्ठभूमि में मानव अस्तित्व को स्वीकार करते हुए मानव जाति को अपने विवेक और बुद्धि से कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की। उन्होंने अपने शिष्यों का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि स्वयं सद्बुद्धि से सत्य का अन्वेषण करें और तदनुरूप कार्य करें। क्योंकि बुद्ध के अनुसार मनुष्य स्वयं अपने प्रयास से अपना उधर और शुद्धिकरण कर सकता है, बुद्ध बन सकता है। थेरवादी बौद्ध धर्म, जो बुद्ध की मूल शिक्षाओं, सिद्धांतों और उपदेशों पर आधारित है, वैसा दर्शन है जो मानव अस्तित्व को मानता है। भगवान बुद्ध की दृष्टि में व्यक्ति जो सांसारिक दुखों से मुक्त होना चाहता है उसे शील, समाधि और प्रज्ञा का अनुसरण करना पूर्ण अपेक्षित है। इस पर बुद्ध ने बहुत अधिक बल दिया था। [४]

भारत के आध्यात्मिक शिखर से करीब ईसापूर्व ५वीं ६वीं सही नेतृत्व मिला था भगवान तथागत बुद्ध का जिन्होंने हिंसा प्रधान यज्ञ, क्रूर जातिवाद मातृजाति का उत्पीड़न तथा महत्वाकांक्षी सत्तालोलुपता से मानवता की रक्षा की है। अंधविश्वास भ्रांत रूढ़ी मान्यताओं मैं भूली भट्टकी मानव जाति को अहिंसा, करुणा, मैत्री का विश्व मंगल संदेश दिया। राष्ट्र नेताओं को, परिवार के हर सदस्य को, समाज के सभी स्तरीय लोगों को सही दिशा दिया, जीवन की सही दिशा दी।

समाज में व्याप्तअन्याय, दुराचार, भ्रष्टाचार आदि अमानवीय अपक्रम है वे सब हिंसा के ही प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप है। इनके प्रतिरोध के लिए राजतंत्र और गणतंत्र दोनों ही प्रकार की शासकीय पद्धतियां थी। मा प्रतापी राजाओं के शासन थे। किंतु जहां शासको तक के शस्त्र न्याय, व्यवस्था और शांति स्थापित करने में सफल नहीं होते वहां इन दिव्य

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

आत्माओं के प्रस्फूटित करुणा, अहिंसा एवं मैत्री के मंत्र सफल हुए हैं।

अंगुलिमाल बुद्ध के युज्ञ का दूर्दांत अपराधी था। लोगों को मार कर उनके हाथों की उंगलियों का माला बनाकर पहना था। किंतु बुद्ध के अमिताभ तेज ने उसकी दुर्दान्तता को शांत किया, उसकी अंतरात्मा को जगाया, सूप्त मानवता को जगाया। इतिहास के पृष्ठो पर एक अंगुलिमाल आया। पर ऐसे कितने ही अंगुलिमाल प्रच्छन्न रूप से रहे होंगे, जिन्होंने बुद्ध की शरण में आकर स्वयं को बदला है।

अर्थात जैसा मैं हूं वैसे ही सब प्राणी है और जैसे ये सब प्राणी है वैसे ही मैं हूं-इस प्रकार अपने सामान सब प्राणियों को समझकर में स्वयं किसी का वध करें ना दूसरों से कराये।[५]

न तेन आरियों होति,येन पाणानि हिंसति।
अहिंसा सब्बपाणानं, आरियों ' ति पवुच्चति।।[६]

अर्थात जो प्राणियों की हिंसा करता है वह आज नहीं होता, बल्कि सभी प्रकार के प्राणियों की हिंसा से विरात रहने वाले को आर्य कहा जाता है। दिशा का व्यक्तित्व महान था तथा अपने सिद्धांत द्वारा उन्होंने जो उपदेश मानव को दिया, वह भी महान था उनकी शिक्षाएं उसे कल में ही नहीं अपितु वर्तमान समय में भी उतना ही महत्व रखती है। बौद्ध धर्म के सिद्धांत नैतिक तथा दार्शनिक दोनों ही क्षेत्र में महत्वपूर्ण है तथा हम कह सकते हैं कि बौद्ध - धर्म के उपदेश समस्त मानव जाति के हितों एवं उनके सुखों के लिए है। महावग्ग मैं उन्होंने कहा है- " चलता, भिक्खवे, चारिकं बहुजन हिताय बहुजन सुखाया लोकानुकम्पाय अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं।७ अर्थात भिक्षुओं! अनेक जानों के हित तथा सुख के संपादन के लिए, लोक पर दया अनुकंपा के लिए, देवता मनुष्यों के हित तथा सुख साधन के लिए (लोक में) विचरण करो।

वर्तमान समय में मानव जाति की सोच एवं आचरण में बदलाव आ गया है। मनुष्य का चित्र आसन एवं अस्थिर हो गया है। सुत्तनिपात मैं प्राणी मात्र के प्रति प्रेम करने का उपदेश दिया गया है। वहां कहां गया है कि शांत पद (निर्माण) की प्राप्ति के इच्छुक मनुष्य को चाहिए कि वह योग तथा अत्यंत सरल बने। उसकी बात मृदु, सुंदर और विनम्रता अमृता से भरपूर हो। वह संतोषी हो, इंद्रिय संयमी हो सदैव निर्दोष रहने का प्रयत्न करें। उसकी यह भावना रहे की सभी प्राणी सुखी हो, सभी का कल्याण हो और सुख पूर्वक रहे।

यदि मानव अपने जीवन में बौद्ध - धर्म के पंचशील का अनुसरण करने लगे तो मानव जाति की लगभग सारी समस्याएं हैं दूर हो जाएगी। वह पंचशील निम्नलिखित प्रकार के हैं-१. जीव हिंसा से विरत रहना। २. चोरी से विरत रहना। ३. व्यविचार से विरत रहना। ४. असत्य भाषण से विरत रहना। ५. मद्यपान से विरत रहना।

मनुष्य को सदाचारी जीवन निर्वहन के लिए पंचशील का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान माना गया है। मनुष्य की धार्मिक प्रवृत्तियां ही शील की ओर परिवर्तित करता है। पंचशील का आधुनिक युग में भी शांति मय वातावरण के निर्माण करने में बहुत बड़ा योगदान है। धर्म के माध्यम से ही व्यक्ति में सदाचार की भावनाओं का उन्नयन होता है। इसका ज्वलंत प्रमाण बौद्ध - धर्म के पंचशील में दृष्टिगोचर होता है।[८] सद्धम्मोपायन में कहां गया है कि जो प्राणी दु:शील से विरत रहते हैं अब वैर रहित, भय रहित, द्वेष रहित तथा रोष रहित हो सुख को प्राप्त करते हैं।[९]

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

व्यक्ति को हिंसा, चोरी , व्यविचार, मद्यपान आदि निंदनीय कर्मों का सदैव परित्याग करना चाहिए। पांच कर्मों का पालन प्रत्येक मनुष्य के लिए अनिवार्य है।

यो पाणामति पातेति मूसा वादच्च भासति।
लोके अदिन्नं आदियति परदारच्च गच्छति।।
सुरामेरयपानईच यो नरों अनुयुजेति।
इधेवमेसो लोकस्मिं मूलं खनति अत्तनो।।[१०]

अर्थात अहिंसा, सत्य,अस्तेय (चोरी ना करना), ब्रह्मचर्य एवं सुरमेंय आदि मादक पदार्थ का असेवन। इन कार्यों इन कार्यों में रत रहने वाला अपनी ही जड़ खोदता है।

संयुक्त निकाय में कहा गया है कि जो शरीर, मां तथा वचन से हिंसा नहीं करता तथा दूसरों को नहीं सताता है, वही अहिंसक है।[११] अहिंसक किया परिभाषा सचमुच बड़ी व्यापक एवं मानवता से भरपूर है।[१२]

आज दिन - प्रतिदिन चोरी डकैती की वारदातें हो रही है। लोगों में असुरक्षा की भावना घर कर गई है। मनुष्य का नैतिक पतन हो गया है। इसी उद्देश्य से चोरी जैसे अपराध से विरत रहने का धर्म के माध्यम से एक नियम बनाते हुए शील में सन्निहित किया गया है।

कामवासनाओं का यह दुष्परिणाम ही है कि एड्स जैसी रिहायणकला इलाज बीमारी समाज में अपनी जड़े जमा रही है। वासना की विकृत मानसिकता के कारण ही नीत्य बलात्कार की घटनाएं हो रही है। यदि मनुष्य बुद्ध के बताएं तीसरे सेल का पालन करें तो समाज से व्यभिचार तथा व्यभिचार जनित रोगों पर काबू पाया जा सकता है।

असत्य भाषण से विरत रहना पंचशील का चौथा महत्वपूर्ण अंग है। मनुष्य को सदैव सत्य वचन बोलना चाहिए। सत्य वचन अप्रिय होते हुए भी सदैव हितकर होता है। सत्य सर्वश्रेष्ठ है। इसके पालन करने से मनुष्य अपने आपको अनुचित कार्य से बचाता है। यह आपस में भाईचारा तथा प्रेम बढ़ाने वाला होता है।

मद्यपान को संसार के सभी धर्मों में घृणित कार्य माना गया है क्योंकि मनुष्य जैसी वस्तुओं का सेवन करता है वैसी ही उसकी बुद्धि होने से उसकी गतिविधियां भी वैसी ही हो जाती है।[१३] मद्यपान करने से न केवल शरीर पतन होता है अपितु इसके सेवन करने से बुद्धि भी भ्रष्ट हो जाती है।

तथापि पंचशील आज के समाज को सम्यक दिशा प्रदान करने में पूर्णतया समर्थ है विश्व बंधुत्व और विश्व प्रेम का एकमात्र यही सम्यक समाधान है। इसके आचरण से प्रतिस्पर्धा और प्रति हिंसा की भावना सर्वथा नष्ट हो सकती है। आज विश्व समाज के लिए इसका आचरण अत्यंत उपयोगी हो सकता है, जिससे विश्व शांति की स्थापना हो सकती है। इसके द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव है।

बौद्ध काल में शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का साधन थी। इसका उद्देश्य मात्र पुस्तक किए ज्ञान प्राप्त करना नहीं था, अपितु मनुष्य के स्वास्थ्य का भी विकास करना था। बौद्ध युग में शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक उत्थान का सर्व प्रमुख माध्यम था।

बौद्ध साहित्य में व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करना शिक्षा का महत्व एवं उद्देश्य बतलाया गया है। चरित्र एवं आचरणहीन व्यक्ति की सर्वत्र निंदा की गई है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति विश्व की सर्वाधिक रोचक तथा महत्वपूर्ण सभ्यताओं में से एक है। इस सविता के संपूर्ण ज्ञान के लिए इसकी शिक्षा पद्धति का अध्ययन आवश्यक है। प्राचीन भारतीयों ने शिक्षा को आध्यात्मिक महत्व प्रदान किया।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

बौद्ध कालीन शिक्षक संस्थाएं (जैसे नालंदा) ने शिक्षा और संस्कृति संबंध बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, नालंदा विश्वविद्यालय बहुत धर्म और दर्शन की शिक्षा का प्रसिद्ध केंद्र था। वहां व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास पर अधिक बल दिया जाता था। इसका जिला कौन व्यवहारिकता की अपेक्षा आदर्शवादी अधिक था। यहां व्याकरण, साहित्य, तर्कविद्या, दर्शन , गणित, ललित कलाएं आदि विविध विषयों की शिक्षाएं प्रदान की जाती थी। प्राचीन भारतीय संस्कृति को समृद्ध साली बनाने में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

बौद्ध धर्म का पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट है, क्योंकि उसे समय लोग वैश्विक पर्यावरण परिवर्तन को लेकर चिंतित नहीं थे इसलिए तथागत ने इस विषय पर विशेष रूप से कोई उपदेश नहीं दिए थे। लेकिन उन्होंने माना कि उनके अनुयायियों के व्यवहार से स्थानीय समुदाय प्रभावित हो सकते हैं, और इसलिए उदाहरण के लिए उन्होंने ऐसे नियम बनाए की भिक्षु-भिक्षुणीओं बहते पानी में या उसके आसपास सोच नहीं करना चाहिए, यानी ऐसी जगह पर जहां लोग नहाना या पानी पीना चाहे। इसी प्रकार, उन्होंने यह भी नियम बनाया की भिक्षुओं और भिक्षुणियों को किसी भी अन्नप्राणी के स्थापित आवास को बाधित नहीं करना चाहिए और नहीं जीवित प्राणियों को मारनाचाहिए, उदाहरण के लिए नए आवास का निर्माण करते समय प्रमन्युक्त बनाना चाहिए। अरमान से अधिक या जीव हिंसा युक्त स्थान में कुटि बनवाने का दोषहै। सातवें संघादिसस में वर्णित है कि छन्न नमक भिक्षु ने कुटी बनवाने के लिए नगर वासियों द्वारा पूजित चैत्र वृक्ष कटवा दिया। जनपद वासियों ने इस दुष्कृत पर दुख प्रकट किया तब भगवान ने नियम बताया कि हिंसा युक्त स्थान पर कुटी निर्माण दोष है।[१४]

इसी प्रकार भगवान बुद्ध ने पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए, 10 दिनों से अधिक अतिरिक्त चीवर रखने पर दिया दोष होता है। आवश्यकता से आवश्यकता से अधिक चीवर रखने पर दोष होता है। इसी प्रकार कल भेद के उनका आसान बनवाने में, प्रतिवर्ष आसान बनवाने में यह दोष होता है। 6 वर्षों तक नए आसान को नहीं ग्रहण करना चाहिए अन्यथा दोष है। 10 दिनों से अधिक अतिरिक्त लोगे या मिट्टी के पात्र रखने में भी तिस्सग्गिय पाचित्तिय दोष लगता है। इसी प्रकार, पाचित्तिय,दुक्का,थुल्लच्चम, वर्षावास,अग्रवाल आदि पर भी दोष का विधान था। अर्थात भिक्षु पृथ्वी खोदे या खुदवाये इसी प्रकार वृक्ष काटने फेंकने एवं सूर्यास्त के बाद उपदेश देने पर अमिस भोजन वस्त्र एवं सुरा कच्ची शराब आदि मांगने पर, पानी में खेल करने, जरूरत ना हो फिर भी निरोगी भिक्षु द्वारा आग जलाना एवं एक ताले से अधिक जूते धारण करने,तृन मूल एवं कमल आदि के पादुकाएं पहने, बक्कल, फलक, केश, कंबल , मृगछाल, चमड़ा वस्त्र पहनने में वर्षा काल में घूमने पर प्रतिबंध के लिए वर्षावास प्रावधान किया उपर्युक्त सभी कार्यों के करने पर इन दोषों का विधान बौद्ध धर्म में था । यह पूरी प्रक्रिया इस बात की गवाही है कि छठी शताब्दी ईसापूर्व के समय में भी बौद्ध धर्म को पर्यावरण के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण दिखाई पड़ता है की सभी प्राणी अंतसंबंधित है। पारिस्थितिक संतुलन और पर्यावरण के प्रति सम्मान को बढ़ावा देता है।

भगवान बुद्ध ने दुनिया को न केवल वैज्ञानिक चिंतन सिखाए अपितु करना और मैत्री को अपने विचारधारा का मुख्य बिंदु बनाकर दुनिया में बदलाव की एक नीम रखें बुद्ध

के संपूर्ण दर्शन के केंद्र में मानव कल्याण की भावना है और यही बात उन्होंने अपने समय से पहले और बाद के विचारों से अलग करती है। कभी स्वयं को ना तो भगवान बताया नहीं भगवान की संतान ना कोई चमत्कार करने की बात कही और नहीं ऐसा कुछ किया। तथागत का धर्म शिक्षाओं पर आधारित एक धर्म दर्शन है। महत्वपूर्ण बात यह है की दिशा शिक्षाओं में अंधविश्वास शामिल नहीं थे-उन्होंने सजगता , अपने जीवन की जिम्मेदारी और सकारात्मक ऊर्जा के विकास का उपदेश दिया।

भगवान बुद्ध ने दुखों की निवृत्ति एवं निर्माण प्राप्ति के लिए अप्रमादी होकर सतत् जागरूक रहकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उपदेश दिए है।

आज के युग में भी भगवान बुद्ध के अमृतमय उपदेश वैश्विक परिदृश्य में कल्याण करने वाला विश्व में व्याप्त इनका उपदेश हरेक देश के वासियों को कल्याण करता हुआ अमर है। बौद्ध धर्म किसी खास देश, व्यक्ति या समाज के लिए नहीं है, यही कारण है कि बौद्ध धर्म का उपदेश करूणा, दया, अहिंसा एवं विश्व बंधुत्व की भावना लिए हुए काण-काण में व्याप्त हो गया है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. धम्मपद, पृ.१५/७।
2. सुत्तनिपात, पृ. १९७।
3. धम्मपद, पृ.१२।
4. अंगुत्तर निकाय -४, पृ.२४८-२५४।
5. सुत्तनिपात, पृ.३०।
6. धम्मपद,१९/५।
7. बौद्ध संस्कृति का इतिहास,डा. भागचन्द्र जैन भास्कर, पृ.२४३।
8. प्राचीन राजवंश और बौद्ध धर्म,डा.अच्युतानन्द घिल्डियाल, पृ.२५-२६।
9. सद्धम्मोपायन, पृ.१७।
10. धम्मपद, १८/१२।
11. संयुक्त निकाय,अहिंसक सुस्त।
12. बौद्ध संस्कृति का इतिहास, डा.भागचन्द्र जैन भास्कर, पृ.-२४४
13. प्राचीन राजवंश और बौद्ध धर्म, डॉ. अच्युतानंद घल्डियाल, पृ.२५।
14. पातिमोक्ख,भागचन्द्र जैन, पृ.-६